श्री प्राणनाथ

जी का प्रकटन

विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक स्वरूप

आख़रुल ज़मां इमाम महंमद महदी साहिबुज्ज़मां

Second Christ

श्री प्राणनाथ जी

का प्रकटन

प्रकाशक

श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ

नकुड़ रोड, सरसावा, सहारनपुर, उ.प्र.

www.spjin.org

सर्वाधिकार सुरक्षित

© २०१८, श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ ट्रस्ट

पी.डी.एफ. संस्करण – २०१८

विषय सूची

	प्राक्कथन	4
1	मूल कारण	8
2	धर्मग्रन्थों की भविष्यवाणियाँ	20
3	संक्षिप्त लीला वृत्तान्त	37
4	ऐतिहासिक प्रमाण	53
5	महिमा	72

प्राक्कथन

युगों–युगों से मानव में यह जिज्ञासा कौंधती रही है कि सच्चिदानन्द परब्रह्म कौन है, कहाँ है, तथा कैसा है? इस सम्बन्ध में कठोपनिषद् के ऋषि का मन्तव्य है–

यमेव एषः वृणुते तेन लभ्यः।

अर्थात् परमात्मा जिसका वरण करता है, वही उसको प्राप्त करता है।

ऐसी स्थिति में प्रश्न यह होता है कि सच्चिदानन्द परब्रह्म कितने मानवों को अपने स्वरूप की पहचान देंगे? सभी धर्मग्रन्थों का यही कथन है कि परब्रह्म मन–वाणी से परे है। इस अवस्था में उस शब्दातीत परब्रह्म के धाम, स्वरूप, तथा लीला का वर्णन करना सम्भव नहीं है। परब्रह्म की कृपा सागर की कुछ बूँदे प्राप्त करने वाले

मनीषियों ने भी परब्रह्म के पहचान के बारे में कुछ प्रकाश डालना तो चाहा, किन्तु वह भी "ऊँट के मुँह में जीरे" के समान है क्योंकि परब्रह्म शब्दातीत है।

संसार के समस्त प्राणियों को एक सच्चिदानन्द परब्रह्म की वास्तविक पहचान देने के लिए यह आवश्यक था कि स्वयं परब्रह्म की आवेश शक्ति ही उसका वर्णन करे क्योंकि मानवीय बुद्धि से यह हो पाना सम्भव नहीं था। इसलिये अनहोनी घटना के रूप में स्वलीला अद्वैत परमधाम की आत्माओं का इस संसार में पदार्पण हुआ, जिसके कारण सर्वेश्वर, सर्वशक्तिमान, सकल गुण निधान, उस सच्चिदानन्द परब्रह्म का आवेश स्वरूप इस संसार में प्रकट हुआ, जिसके द्वारा अवतरित तारतम वाणी के प्रकाश में इन सच्चिदानन्द परब्रह्म की पहचान हो सकती है और समस्त सृष्टि इस भवसागर से पार हो

सकती है। यद्यपि अवतार महापुरुषों का होता है , सच्चिदानन्द परब्रह्म का नहीं–

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिः भवति भारत।

अभ्युत्थानं धर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।

परित्राणाय साधुनां विनाशाय च दुष्कृताम्।

धर्म संस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे।।

श्री प्राणनाथ जी का प्रकटन एक अनहोनी घटना है, जिसमें सच्चिदानन्द परब्रह्म का आवेश स्वरूप इस संसार में श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप (श्री विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक स्वरूप , इमाम मुहम्मद महदी साहिब्बुजमां, या Second Christ) में प्रकट होकर तारतम वाणी के माध्यम से परमधाम एवं परब्रह्म की सम्पूर्ण पहचान दे रहा है, जो संसार के सभी मत–पन्थों

को समान रूप से ग्राह्य है।

राजन स्वामी

श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ

सरसावा

मूल कारण

सच्चिदानन्द परब्रह्म के इस संसार में प्रकटन का जो मूल कारण था, वह यहाँ धर्मग्रन्थों के प्रमाण के साथ वर्णन किया जा रहा है।

पुराण संहिता में कहा गया है–

अक्षर ब्रह्म पूर्ण–अखण्ड, प्रकृति के गुणों से रहित, आसक्ति रहित, निर्मल, अनन्त, इच्छा रहित, और प्रकृति से परे है।।४४।।

इसी प्रकार वह अनादि परब्रह्म सत्, चित्, और आनन्द लक्षणों वाला है। रस तथा रूप के भेद से वह नित्य ही अलग स्थित है।।५१।।

उपमा से रहित, स्वलीला अद्वैत, तथा इन्द्रियों से प्रत्यक्ष न होने वाला वह परब्रह्म अति प्रेममयी स्वरूप को

धारण करने वाला है तथा आत्मा रूप सखियों का अति प्यारा परम तत्व है।।५३।।

उस प्रेममयी परम तत्व को धारण करने, प्यार करने, तथा रस लेने में सखियाँ प्रत्यक्ष रूप से समर्थ नहीं है। अत: उनसे प्रेम क्रीड़ा करने के लिये उनके ही अलग रूप में स्वामिनी (श्यामा जी) प्रथम अंग हैं।। ५४।।

अक्षर ब्रह्म के हृदय को प्रेम एवं आनन्द की हिलोरें लेने वाले सागर के स्वभाव से रहित जानना चाहिए, जो मात्र ज्ञान के स्वरूप हैं और बालक की तरह सृष्टि को बनाने और संहार करने की लीला करते हैं।।५९।।

इसलिये उस अक्षर ब्रह्म में परमधाम में प्रवेश की इच्छा उत्पन्न करने के लिये अखण्ड रूप में प्रेम का अंश

अल्प मात्रा में स्थित रहता है।।६१।।

एक बार अक्षर ब्रह्म अक्षरातीत परब्रह्म का दर्शन करने के लिये परमधाम में गये।।६५।।

परमधाम की लीला देखने की इच्छा वाले अक्षर ब्रह्म ऊपर दृष्टि किये हुए अनन्य हृदय से केवल उस रंगमहल की भूमिका की ओर ही देखते हुए बहुत अधिक समय तक खड़े रहे। उस समय तीसरी भूमिका में विराजमान अक्षरातीत नृत्य और गान में तल्लीन सखियों से घिरे हुए थे।।६६,६७।।

उसे देखकर अक्षर ब्रह्म भौंचक्का होते हुए मोहित मन वाले हो गये। तब उन्होंने अपने मन में यह विचार किया कि अहो! यह कितनी अदभुत छवि है।।७४।।

यह लीला अतुलनीय रहस्य वाली है। देखने के

लिये व्याकुल मैं उसे कैसे देख सकता हूँ। यदि अक्षरातीत मेरे ऊपर कृपा करें, तो मैं उसे देख भी सकता हूँ।।७९।।

अक्षर: पुरूष पूर्णोऽनवचिछन्नश्च निर्गुण:।

नि:सङ्गो निर्मलोऽनन्तो निरीह: प्रकृते: पर:।।४४।।

अनादिमत्परं ब्रह्म सच्चिदानन्द लक्षणम्।

रस रूपतया तत्तु नित्यमेव पृथक् स्थितम्।।५१।।

अनोपम्यात्स्व भोग्यत्वात्पुरूषागोचरत्वत:।

प्रेष्ठत्वात्परमं तत्वं स्त्रीणां काम स्वरूपधृक्।।५३।।

पातुं लालयितुं भोक्तुं स्त्रिय: शक्ता न तं परे।

रमणार्थ प्रथग्भावात्स्वामिनी स्वामिनी प्रथमं दलं।।५४।।

नि: स्पंदैर्वृतिभिर्हीनं तथान्त: करणेन च।

तदक्षरं च विज्ञेयं ज्ञानमात्रं च बालवत्।।५९।।

द्वारत्व सिद्धये तस्मिन्निच्छा विर्भावहेतवे।

कामांशो लवमात्रस्तु नित्यमेव व्यवस्थित:।।६१।।

तदैकदाऽक्षरो दृष्टुं जगाम पुरूषोत्तमम्।

महासौधाङ्गणबहि: पद्मोधानभुविश्रित:।।६५।।

दिदृक्षाकुलाचित्तत्वादूर्ध्वदृष्टि: कृतांजलि:।

अनन्यचेतास्तत्सौध भूमिकालग्न लोचना:।।६६।।

चिरंतस्थौ तदाकृष्णौ भूमिका तृतीयांश्रित:।

सखी वृन्दै: परिवृतौ नृत्यगान परायणै:।।६७।।

दृष्टवा विमोहित मना वभुवाविकृतोऽपि सन्।

विचारयामास तदा अहो किमिदमद्भुतम्।।७४।।

लीलारहस्यमतुलं कथं द्रक्ष्येहमातुरः।

द्रक्ष्येहमपि चेत्कृष्णोऽनुग्रहं कुरूते मयि।।७९।।

(पुराण संहिता प्रकरण २२)

आगे पुराण संहिता में कहा गया है–

इसी प्रकार अक्षरातीत की प्रियाओं (आत्माओं) ने कहा– हे नाथ! इस पूर्ण आनन्दमयी धाम में भला क्या दुर्लभ हो सकता है? फिर भी हे नाथ! आपकी प्रियाओं में एक बहुत बड़ी इच्छा है।।५१।।

हे प्रियतम! इस इच्छा की व्याकुलता हमें बहुत अधिक पीड़ा दे रही है। उसे पूरा करके हमें कष्ट से मुक्त कीजिए। अक्षर ब्रह्म की प्रकृति की जो विचित्र लीला है, उसे देखने की इच्छा हमारे चित्त को व्याकुल कर रही है।

अब बिना कुछ भी विचार किये आज ही हमें उस लीला का दर्शन कराइये।।५२,५३।।

अक्षरातीत पूर्णब्रह्म अपनी आत्माओं से कहते हैं– प्रकृति की लीला मोहित करने वाली तथा अपने अमृतमयी आत्मिक आनन्दरूपी दीवार को स्याही की तरह काली करने वाली है। जहाँ केवल प्रवेश करने मात्र से ही अपनी बुद्धि नहीं रहती है।।५६।।

पाँच तत्वों के बने हुए शरीर को ही अपने आत्मिक रूप में माना जाता है, जिससे आत्मिक गुण तो छिप जाते हैं।।५७।।

और उनकी जगह मोहजनित दोष पैदा हो जाते हैं। हे सखियों! तुम वहाँ जाकर माया के ही कार्यों को करोगी। जिस माया में आत्मा के आनन्द को हरने वाली

तृष्णा रूपी पिशाचनी है।।५८।।

जहाँ काम, क्रोध आदि छः शत्रु स्थित हैं, जो जीव को पाप में डुबोकर तथा क्रूर कर्म कराकर उसे बलहीन करके लूट लेते हैं।।५९।।

वहाँ जाकर तुम यहाँ के अपने स्वाभाविक गुणों, सौंदर्य, और चतुरता के विपरीत हो जाओगी। मुझे तुम कहीं भी नहीं देखोगी और हमेशा ही मुझको भूली रहोगी।।७८।।

पूर्णानन्द पदे नाथ दुर्लभं किं न विद्यते।

तथापि महती नाथ तृष्णैका त्वत्प्रियासु च।।५१।।

कुरूते महतीमार्ति तां वारय महाभुज।

अक्षर प्रकृतेर्लीला विचित्रा या प्रवर्तते।।५२।।

तद्विदृक्षा तु नश्चित्तमाकुलीकुरूते प्रभो।

तल्लीला दर्शनं नोद्य कारयाश्चविचारत:।।५३।।

प्रकृता मोहिनी लीला स्वात्मभित्ति सुधामसी।

यत्र प्रवेश मात्रेण स्वात्मानमुत्सृजेद्बुध:।।५६।।

पंच भूतमयम्पिण्डमात्मत्वे नाभिमन्यते।

तिरो भवेयु: स्वात्मधर्मा उद्भवन्ति ततोऽन्यथा।।५७।।

आचरिष्यथ भो सर्वा मायाकार्याणि सर्वथा।

तृष्णा पिशाची यत्रास्ते स्वात्मानन्दापहारिणी।।५८।।

काम क्रोधादिनामानो यत्र षट् दस्यव: स्थिता:।

पाविष्टा: क्रूर कर्माणो विलुम्पन्ति बलाद्धतम्।।५९।।

गुण सौन्दर्य चातुर्यवैपरीत्यमवाप्स्यथ।

मां न द्रक्ष्यथ कुत्रापि विस्मरिष्यथ सर्वदा।।७८।।

(पुराण संहिता प्रकरण २३)

इसी प्रकार का वर्णन नारद पंचरात्र के अन्तर्गत **माहेश्वर तन्त्रम्** में भी किया गया है।

कुरआन के अन्दर "अलस्तो बिरब्ब कुंम" का कथन भी इसी इश्क रब्द (प्रेम–संवाद) की ओर संकेत करता है।

कुछ–कुछ समय के अंतराल पर आत्माओं ने परब्रह्म से तीन बार प्रार्थना की। अक्षर ब्रह्म भी प्रतिदिन अपने हृदय में परमधाम की उस लीला को देखने की इच्छा करते रहे। परमधाम की उस लीला के चिन्तन में खोये हुए हृदय वाले अक्षर ब्रह्म अपने धाम जाकर अपने निवास स्थान में अखण्ड समाधि की भांति स्थित हो

गये। (पुराण संहिता २४/२५,२६)

समय व्यवधानेन त्रिवारं प्रार्थितो विभु:।

अक्षरेणान्वहमपि तदधाद्धृदये निजे।।२५।।

अक्षरस्तु स्वकं धाम गत्वे निजपदे स्थित:।

लीलाचिन्ताप्रविष्टात्मा समाधिस्थ इवाचल:।।२६।।

इस प्रकार परमधाम के इस प्रेम–संवाद के कारण आत्माओं के साथ परब्रह्म को अनहोनी घटना के रूप में दो बार इस नश्वर ब्रह्माण्ड में आना पड़ा।

पहली बार, व्रज में ११ वर्ष ५२ दिन तक श्री कृष्ण जी के तन में विराजमान अक्षरातीत ने अपनी आत्मा

स्वरूपा गोपियों के साथ प्रेम लीला की। तत्पश्चात् महारास की प्रेममयी लीला के लिये उन्होंने योगमाया के ब्रह्माण्ड में प्रवेश किया। योगमाया का वह ब्रह्माण्ड इस नश्वर जगत से पूर्णतया अलग है, जिसमें चेतनता, अखण्डता, तथा प्रकाशमयी शोभा है।

पुन: आत्माओं की इच्छा पर परब्रह्म उन्हें परमधाम ले गये, जहाँ वे अपने मूल तनों में जाग्रत हो गयीं। ब्रह्मसृष्टियों की माया देखने की इच्छा अभी पूरी न हो सकने के कारण, उन्हें पुन: दूसरी बार २८वें कलियुग में इस नश्वर जगत् में आना पड़ा।

❖❖❖❖❖

धर्मग्रन्थों की भविष्यवाणियाँ

हिन्दू ग्रन्थों की साक्षियाँ

पुराण संहिता में कहा गया है कि परमधाम की आत्माओं के अन्दर नश्वर जगत् की दुःखमयी लीला को देखने के लिए, जो कभी भी इसके पहले उत्पन्न न होने वाली इच्छा थी, वह प्रियतम के साथ में रहने के कारण स्वभावतः पूरी नहीं हो सकी।

वह इच्छा उनके अन्दर बीज रूप से स्थित थी। सुख की वासना के लक्षणों से सम्बन्धित जीव ही संसार को प्राप्त हो सकते हैं। निश्चय ही जन्मजात संस्कार पूर्ण रूप से छूट नहीं पाते हैं। इसी प्रकार अक्षरातीत की प्रियायें भी खेल देखने की पहले वाली इच्छा से युक्त बनी रहीं। उसकी पूर्ति न होने से निजधाम में वे आत्मायें

जाग्रत न हो सकी। इसके पश्चात् पहले की तरह ही वह कालमाया उत्पन्न हुई तथा माया का वह ब्रह्माण्ड पुनः बन गया, जो पहले वाले ब्रह्माण्ड के स्वभाव, आकार, गुणों वाला, एवं उसी प्रकार विशाल है।

दुःख लीलावलोकाय योऽभूत्पूर्व मनोरथः।

प्रियस्य साहचर्येण न सिद्धोऽभूत्स्वभावतः।।

स एव बीजरूपेण तस्यौ शिष्टो मुनीश्वर।

वासनालिंग सम्बद्धा जीवाः संसारमाप्नुयुः।।

सर्वथा न विमुच्यन्ते जन्मभाजो भवन्ति हि।

तथा कृष्णप्रियाः सर्वाः पूर्ववासनयान्विताः।।

तदपूत्र्या निजे धाम्नि न प्रबुद्धा मुनीश्वर।

ततः प्रादुरभूत्कालमाया पूर्ववदेव सा।।

तिरोहिता योगशक्तिः प्रपन्च पुनरूत्थितः।

तत्स्वभावस्तदाकारतद् गुणस्तद्विधो महान।।

(पुराण संहिता ३१/२५-२९)

अपनी इच्छा के पूरी न होने के कारण अक्षरातीत की वे प्रियायें इस ब्रह्माण्ड में प्रगट होंगी। अपने परमधाम में कुछ समय तक सुषुप्त की तरह रहने के पश्चात् कालमाया के स्वप्न के ब्रह्माण्ड में पुनः अवतरित होंगी। २८वें कलियुग के प्रथम चरण में पुनः माया का खेल देखने की इच्छा शेष रह जाने के कारण, वे असहनीय दुःख के भोग को प्राप्त होंगी। वे अलग-अलग देशों में तथा ब्राह्मण आदि कुलों में पैदा होंगी। कुछ स्त्रियों का रूप धारण करेंगी, तो कुछ पुरुषों का।

तत्रावतीर्णाः कृष्णस्य प्रियास्ता वासनाबलात्।

किन्चित्कालं निजपदे सुषुप्ताविव संस्थिताः।।

अष्टाविंशतिमे तस्य कलौ तच्चरणादि मे।

मनोरथावशेषस्य भोगमाप्स्यन्ति दुःसहम्।।

देशे देशे भविष्यन्ति ब्राह्मणादि कुलेष्वपि।

काश्चित्स्त्री रूपधारिव्यः पुरूषाअपि काश्चन।।

(पुराण संहिता ३१/३०,३३,३४)

अज्ञानता के अगाध सागर में प्रियाओं के गिर जाने पर प्रियतम परब्रह्म स्वयं अपने कृपा रूपी महासागर में स्नान करायेंगे, अर्थात् स्वयं प्रकट होकर अपने अलौकिक ज्ञान से उन्हें जाग्रत करेंगे।

आगाधाज्ञान जलधौ पतितासु प्रियासु च।

स्वयं कृपामहाम्भोधौ ममन्ज पुरूषोत्तमः।।

(पुराण संहिता ३१/५०)

पुराण संहिता के अध्याय ३१ श्लोक ५२–७० में दिये हुए संकेतों के आधार पर एक श्लोक की रचना होती है, जिसका भावार्थ यह है कि परमधाम की आत्मायें सुन्दरी और इन्दिरा (श्यामा जी और इन्द्रावती) जिन दो तनों में प्रकट होंगी, उनके नाम चन्द्र और सूर्य (देवचन्द्र और मिहिरराज) होंगे, तथा इनके अन्दर साक्षात् परब्रह्म विराजमान होकर लीला करेंगे, जिससे माया के अज्ञान रूपी अन्धकार का नाश हो जायेगा।

सुन्दरी चेन्दिरा सख्यौ नामाभ्यं चंद्रसूर्ययोः।

मायांधकारनाशाय प्रति बुद्धे भविष्यतः।।

बृहत्सदाशिव संहिता के अन्दर भी यही बात कही गयी है कि सच्चिदानन्द स्वरूप परब्रह्म की वे सखियाँ, जो व्रज और नित्य वृन्दावन की लीला में थीं, वे कलियुग में पुनः प्रकट होंगी और जाग्रत होकर पुनः अपने उस धाम में जायेंगी। चिद्घन स्वरूप परब्रह्म के आवेश से युक्त अक्षर ब्रह्म की बुद्धि अक्षरातीत की प्रियाओं को जाग्रत करने के लिये तथा सम्पूर्ण लोकों (१४ लोकों के इस ब्रह्माण्ड) को मुक्ति देने के लिये भारतवर्ष में प्रकट होगी। वह प्रियतम के द्वारा स्वामिनी (श्यामा जी) के हृदय में स्थापित किये जाने पर चारों ओर फैलेगी। इस प्रकार परब्रह्म की प्रियायें उस परम ज्ञान को प्राप्त करके तथा जाग्रत होकर अपनी सम्पूर्ण कामनाओं को पूर्ण कर लेंगी तथा परम आनन्द को प्राप्त होंगी।

आनन्दरूपाः या सख्या ब्रजे वृन्दावने स्थिताः।

कलौ प्रादुर्भविष्यन्ति पुनर्यास्यन्ति तत्पदम्।।

चिदावेशवती बुद्धिरक्षस्य महात्मनः।

प्रबोधाय प्रियाणां च कृष्णस्य परमात्मनः।।

मुक्तिदा सर्व लोकानां भविता भारताजिर।

प्रसरिष्यति हृद्देशे स्वामिन्याः प्रभुणेरिता।।

एवं सम्प्राप्त विज्ञाना विनिद्रा ब्रह्मणः प्रियाः।

प्राप्स्यन्ति परमानन्दं परिपूर्ण मनोरथाः।।

(बृहत्सदाशिव संहिता १७,१८,१९,२०)

श्रीमद्भागवत् का यह कथन बृहत्सदाशिव संहिता के उपरोक्त कथन के बहुत अनुकूल है, जिसमें कहा गया है

कि शान्तनु के भाई देवापि तथा इक्ष्वाकु वंशीय राजा मरु इस समय कलाप ग्राम में स्थित हैं। वे दोनों महान योगबल से युक्त हैं। परमात्मा की प्रेरणा से वे दोनों कलियुग में पहले की भांति ही धर्म की स्थापना करेंगे।

देवापिः शांतनोभ्राता मरूश्चेक्ष्वाकुवंशज।

कलाप ग्राम आसाते महायोग बलान्वितौ।।

ताविहैत्य कलेरन्ते वासुदेवानुशिक्षितौ।

वर्णाश्रमयुतं धर्म पूर्ववत प्रथयिष्यतः।।

(श्रीमद्भागवत् १२/२/३७,३८)

इस कथन के साथ पुराण संहिता का वह पूर्वोक्त कथन भी सार्थक हो जाता है, जिसमें परब्रह्म को जिन दो तनों में लीला करनी है, उनके नाम चन्द्र और सूर्य बताये गये हैं। दोनों में आत्मा श्यामा जी और इन्दिरा की

होगी, तथा जीव देवापि और मरु का होगा। इस प्रकार वे दोनों तन इस कलियुग में श्री देवचन्द्र और श्री मिहिरराज (संस्कृत में मिहिर का अर्थ सूर्य होता है) हैं, जिनके अन्दर परब्रह्म ने लीला की। इसी कारण वे श्री निजानन्द स्वामी तथा श्री प्राणनाथ जी के रूप में प्रसिद्ध हुये।

भविष्योत्तर पुराण तथा भविष्य दीपिका ग्रन्थ में तो इनके प्रकटन का समय भी लिखा हुआ है–

"जब हिन्दू तथा मुसलमानों में परस्पर विरोध होगा तथा औरंगज़ेब का राज्य होगा, तब वि.सं. १७३८ का समय होगा। उस समय अक्षर ब्रह्म से भी परे सच्चिदानन्द परब्रह्म की शक्ति भारतवर्ष में इन्द्रावती आत्मा के अन्दर विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक स्वरूप में प्रकट होगी। वे

चित्रकूट के रमणीय वन के क्षेत्र (पद्मावती पुरी, पन्ना) में प्रकट होंगे।"

परस्परं विरोधे च अवरश्ख्योः भवद्यदा।

विक्रमस्य गतेऽब्दे सप्तदशाष्ट त्रिकं यदा।

तदायं सच्चिदानन्दोऽक्षरात्परतः परः।।

भारते चेन्दिरायां स बुद्धः आविर्भविष्यति।

स बुद्धः कल्कि रूपेण क्षात्र धर्मेण तत्परः।।

चित्रकूटे वने रम्ये स वै तत्र भविष्यति।।

(भविष्योत्तर पुराण उ. ख. अ. ७२ ब्रह्म प्र.)

शालिवाहन शाकात् तु गत षोडशकं शतम्।

जीवोद्धाराय ब्रह्माण्डे कल्किः प्रादुर्भविष्यति।।

(भविष्य दीपिका अध्याय ३)

इस सम्बन्ध में **सिख पन्थ के "पुरातन सौ साखी"** (भविष्य की साखियाँ) ग्रन्थ के पृष्ठ ६५–६६ पर स्पष्ट लिखा है–

नेह कलंक होय उतरसी, महाबली अवतार।

संत रक्षा जुग जुग करे, दुष्टां करे संहार।।

नवां धरम चलावसी, जग में होवन हार।

नानक कलजुग तारसी, कीर्तन नाम आधार।।

वि.सं. १७३८ का समय वही है, जो शाका सालिवाहन के १६०० वर्ष पूर्ण होने का है। भविष्य दीपिका ग्रन्थ का कथन है कि सालिवाहन शाका के १६०० वर्ष व्यतीत हो जाने पर सम्पूर्ण जीवों के उद्धार के लिये इस ब्रह्माण्ड में "कल्कि" का आगमन होगा।

हिन्दू धर्मग्रन्थों में जो समय वि.सं. १७३८ और शक सम्वत् १६०० का है, वही समय हिजरी सन् १०९० का है। कुरान–हदीसों के अनुसार परब्रह्म अल्लाह तआला के इमाम महदी के रूप में प्रकटन का भी वही समय है।

कुरआन मजीद की गवाहियाँ

"अल्लाह मुर्दों को कयामत के दिन उठायेगा और फिर सभी उसी की तरफ जायेंगे।"

ब्लमौता यब् असुहुमुल्लाह सुम्मअिलैहि युर्ज अुन।

(मंजिल २ पारा ७ सूरा ६ आयत ३६)

इस आयत में शरीर को कब्र कहा गया है। जब इमाम महदी इल्म–ए–लदुन्नी लायेंगे, तो जीव भी जाग्रत

होकर अपनी और खुदा की पहचान कर लेंगे। इसी को कब्रों से मुर्दों का उठना कहते हैं। कयामत के समय अल्लाह के आने पर ही यह सम्भव हो सकेगा। इस प्रकार कयामत का समय मालूम होने पर इमाम महदी के स्वरूप में आने वाले खुदा का समय भी स्पष्ट हो जायेगा।

अल्लाह की तरफ से जिबरील द्वारा कहा गया–

"ये काफिर तुमसे पूछते हैं कि बताओ! अगर तुम सच्चे हो, तो यह कयामत का वादा कब पूरा होगा? कह दो तुम्हारे साथ एक दिन का वादा है।"

व यकूलून मत्ता हाजल्वऽदुअिन् कुन्तुम सादिकीन।

कुल लकुम मीआदुयौमिल्ला तसत् अखिरून अन हु साआतौंव ला तस्त क्दिमन।

(मंजिल ५ पारा २२ सूरा ३४ आयत २९,३०)

यहाँ यह स्पष्ट है कि कयामत कल (फरदा रोज़) को होगी, "और ऐ पैगम्बर! तुमसे सजा की जल्दी मचा रहे हैं (कि कहाँ है तुम्हारा खुदाई अजाब?) और अल्लाह तो कभी भी वादा खिलाफी नहीं करेगा और कुछ शक नहीं कि तुम्हारे परवरदिगार के यहाँ का एक दिन तुम लोगों की गिनती के अनुसार १००० वर्ष के बराबर है।"

वयस्तऽजिलूनक बिल अजाबि व लैयुखलि फल्लाहु वऽदहु त व अिन्न यौमन् अिन्द रब्बिक कअल्कि सनतिम्मिम्मा तअुछून।

(मंजिल ४ पारा १७ सूरा २२ आयत ४७)

दुनिया के १०० वर्षों के बराबर खुदा की एक रात होती है।

अर्थात् १००० + १०० = ११०० वर्ष

इस प्रकार क़ुरआन के कथनानुसार ११वीं सदी में इमाम महदी अल्लाह तआला का प्रकट होना सिद्ध होता है।

मुकम्मल सही बुखारी हजरत इमाम सफा ६६४/९ में भी कहा गया है– "कयामत के दिन तुम अपने अल्लाह का दीदार करोगे और कोई दिक्कत नहीं होगी।"

क़ुरआन में कयामत के सात निशानों में से एक निशान यह भी है कि इमाम महदी के साथ जाग्रत बुद्धि का फरिश्ता इस्राफील तथा हुक्म की शक्ति भी होगी।

बाइबल के दृष्टान्त

यही बात बाइबल में भी कही गयी है कि एक शक्तिशाली शोर तथा सबसे बड़े हुकम के फरिश्ते और

(परमात्मा की) महान तुरही से युक्त आत्मा को झकझोरने वाली तेज आवाज के साथ परब्रह्म अपने परमधाम से स्वयं आयेंगे और विश्वास करने वाले वे लोग, जो मर चुके हैं, परब्रह्म से मिलने के लिये सबसे पहले उठेंगे।

For the Lord himself will come down from heaven with a mighty shout and with the soul stirring cry of the archangel and the great trumpet call of God. And the believers who are dead will be the first to rise to meet the Lord.

(Bible – Thessalonians 4 : 16)

बाइबल के इस कथन में जाग्रत बुद्धि के फरिश्ते

इस्राफिल को परब्रह्म की तुरही कहा गया है, अर्थात् Supreme Truth God (श्री प्राणनाथ जी) जब इस दुनिया में आयेंगे तो उनके साथ आत्मा को झकझोरने वाला निजबुद्धि का ज्ञान, हुकम की शक्ति, तथा इस्राफिल फरिश्ता होगा। मरे हुए लोगों के दोबारा जीवित होने का यह अर्थ है कि परब्रह्म के दिये हुए जाग्रत ज्ञान को पाकर वे अपनी तथा अक्षरातीत परब्रह्म की वास्तविक पहचान कर लेंगे।

Supreme Truth God के साथ इस्राफिल तथा हुक्म की शक्ति होने से यह स्पष्ट होता है कि बाइबिल के अनुसार भी परब्रह्म के इस नश्वर जगत में प्रकट होने का वही समय वि. सं. १७३५ या ग्यारहवीं सदी १०९० हिज़री है, जो हिन्दू धर्मग्रन्थों तथा क़ुरआन में लिखा है।

संक्षिप्त लीला वृत्तान्त

गीता में योगेश्वर श्री कृष्ण जी कहते हैं कि जब–जब धर्म की हानि होती है, तब–तब मैं धर्म की वृद्धि के लिए अवतरित होता हूँ। उनका यह कथन संसार के कल्याण के लिए अवतरित होने वाले महापुरुषों की भावना से सम्बन्धित है, परन्तु परब्रह्म अक्षरातीत की लीला इससे भिन्न है। वेद के कथनानुसार– सच्चिदानन्द परब्रह्म का अवतार होना सम्भव नहीं है। वेद, गीता, उपनिषदों में वर्णित कूटस्थ, ध्रुव (अखण्ड), परिणाम से रहित ब्रह्म कभी भी गर्भ में नहीं आ सकता। पंचभौतिक तन के जन्म लेने के पश्चात् मात्र परब्रह्म की आवेश और जोश की शक्ति का ही उसमें प्रकटन हो सकता है। परब्रह्म श्री प्राणनाथ जी तथा उनकी आत्माओं का निज स्वरूप उस अनन्त परमधाम में अखण्ड रूप से विद्यमान है।

यदि उनका आवेश स्वरूप इस सांसारिक नश्वर तन में प्रकट होता है, तो उसे ही "परब्रह्म के प्रकटन" की संज्ञा दी जाती है।

परमधाम से ब्रह्मात्माओं का इस नश्वर संसार में प्रकटन हुआ। उनके साथ अक्षरातीत परब्रह्म श्री प्राणनाथ भी आये, और उन्होंने श्री देवचन्द्र और श्री मिहिरराज नामक दो तनों में विराजमान होकर अलौकिक लीला की।

धर्मग्रन्थों के कथनानुसार कलाप ग्राम निवासी देवापि के जीव ने वि.सं. १६३८ में आश्विन मास को शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी को मारवाड़ उमरकोट गाँव में श्री देवचन्द्र के रूप में जन्म लिया। इनके पिता का नाम श्री मत्तु मेहता तथा माता का नाम कुँवर बाई था। परमधाम की श्यामा जी (परब्रह्म के आनन्द अंग) ने इनके तन में

प्रवेश किया।

जब श्री देवचन्द्र जी की उम्र मात्र ११ वर्ष की थी, तभी से उनके मन में यह जानने की प्रबल जिज्ञासा उत्पन्न हो गयी कि मैं कौन हूँ, कहाँ से आया हूँ, तथा मेरी आत्मा का प्रियतम कौन है? इन प्रश्नों का समाधान पाने के लिये उन्होंने बहुत प्रयास किया, किन्तु स्पष्ट उत्तर नहीं मिल पाया। कुछ समय के पश्चात उमरकोट से कच्छ के लिये जाने वाली बारात के पीछे–पीछे चलते समय परब्रह्म ने दर्शन देकर यथेष्ठ स्थान पर पहुँचा दिया, किन्तु वे उनको पहचान नहीं पाये।

कच्छ में अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिये वे अनेक ज्ञानियों, सन्यासियों, वैरागियों आदि के पास गये। उनके बताये हुए मार्ग के अनुसार उन्होंने साधना भी की, लेकिन उन्हें सन्तोष नहीं हुआ। अन्त में राधा –वल्लभ

मत के अनुयायी हरिदास जी के सान्निध्य में रहकर वे सेवा–ध्यान करने लगे। हरिदास जी ने उन्हें दीक्षा भी दे दी। २६ वर्ष की उम्र में ध्यान द्वारा दूसरी बार उन्हें परब्रह्म का साक्षात्कार हुआ।

इसके पश्चात् हरिदास जी की प्रेरणा से वे नवतनपुरी (जामनगर) आकर कान्ह जी भट्ट से श्रीमद्भागवत् की कथा सुनने लगे। जब उनकी उम्र ४० वर्ष की हो गयी, तो श्याम जी के मन्दिर में कथा सुनते समय साक्षात् परब्रह्म ने उन्हें दर्शन दिया। परब्रह्म ने उन्हें परमधाम के इश्क–रब्द, व्रज एवं रास लीला, तथा जागनी ब्रह्माण्ड की सारी बातें बतायी और उनके धाम हृदय में आवेश स्वरूप से विराजमान हो गये।

इस घटना के पश्चात् श्री देवचन्द्र जी "निजानन्द स्वामी" के रूप में प्रसिद्ध हो गये तथा उनके अलौकिक

ब्रह्मज्ञान की चर्चा सुनने के लिये जनसमूह उमड़ पड़ा। उनके द्वारा दिये हुए तारतम्य ज्ञान का अनुसरण करने वाले सुन्दरसाथ कहलाये। सुन्दरसाथ के समूह में हरिदास जी भी थे, जिन्होंने पहले श्री देवचन्द्र जी को मन्त्र दीक्षा दी थी।

पूर्व वर्णित धर्मग्रन्थों के कथनानुसार राजा मरू ने जामनगर राज्य के मन्त्री (दीवान) श्री केशव ठाकुर माता धनबाई के सुपुत्र श्री मिहिरराज के रूप में जन्म लिया। इनका जन्म वि.सं. १६७५ में भादो मास की कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को हुआ था। श्री मिहिरराज के तन में परमधाम की इन्द्रावती (इन्दिरा) आत्मा ने प्रवेश किया, जिन्हें बाद में "महामति" की शोभा मिली, तथा इनके धाम हृदय में विराजमान होकर परब्रह्म ने लीला की।

श्री मिहिरराज लगभग १२ वर्ष की उम्र में सद्गुरू

धनी श्री देवचन्द्र जी की शरण में आये तथा उनसे तारतम ज्ञान ग्रहण किया। श्री निजानन्द स्वामी (सद्गुरू धनी श्री देवचन्द्र जी) ने उन्हें देखते ही पहचान लिया कि भविष्य में परब्रह्म की लीला इसी तन के द्वारा होगी।

श्री मिहिरराज बचपन से ही इतनी अधिक अलौकिक प्रतिभा के स्वामी रहे हैं कि जामनगर के भागवत् के सबसे बड़े विद्वान कान्ह जी भट्ट उनके इस प्रश्न का उत्तर नहीं दे पाये कि महाप्रलय के पश्चात परब्रह्म का स्वरूप कहाँ रहता है? भट्ट जी ने स्पष्ट रूप से कह दिया था कि इसका उत्तर ब्रह्मा जी के पास भी नहीं है।

कुछ समय के पश्चात् परमधाम के दर्शन हेतु श्री मिहिरराज जी ने इतनी कठोर साधना की कि उनका शरीर जीर्ण–शीर्ण हो गया, लेकिन उन्होंने परमधाम की एक झलक पा ही ली। तदन्तर श्री निजानन्द स्वामी ने

उन्हें सेवा कार्य हेतु अरब भेज दिया, जहाँ वे लगभग ५ वर्षों तक रहे। वापस आने पर कुछ कारणवश उन्हें श्री निजानन्द स्वामी का सान्निध्य प्राप्त न हो सका।

वि.सं. १७१२ में सद्गुरू धनी श्री देवचन्द्र जी का धामगमन (देह त्याग) हो गया। इसके पूर्व उन्होंने श्री मिहिरराज जी को बुलाकर भविष्य की सारी बातें बता दी कि भविष्य में जागनी लीला तुम्हारे तन से होगी। सद्गुरू धनी श्री देवचन्द्र जी के धामगमन के पश्चात् श्री मिहिरराज ने धर्म प्रचार का उत्तरदायित्व सम्भाला।

श्री मिहिरराज जी ने आत्म–जाग्रति हेतु सब सुन्दरसाथ को एकत्रित करने की योजना बनाई, किन्तु जामनगर के वजीर के यहाँ झूठी चुगली के कारण हब्सा में नजरबन्द होना पड़ा। यहाँ अपने प्रियतम के विरह में तड़प–तड़प कर उन्होंने अपने शरीर को मात्र हड्डियों का

ढाँचा बना दिया। अन्ततोगत्वा सचिचदानन्द परब्रह्म को उन्हें दर्शन देकर उनके धाम हृदय में विराजमान होना पड़ा। अब सबने उन्हें **प्राणनाथ, धाम धनी, श्री राज, श्री जी**, आदि कहना शुरू कर दिया, क्योंकि इन शब्दों का अर्थ होता है **अक्षरातीत**। उपनिषदों का यह कथन "ब्रह्मविदो ब्रह्मोव भवति" भी उस समय पूर्ण रूप से सार्थक हो उठा।

अब उनके तन से परब्रह्म के आवेश स्वरूप द्वारा "श्रीमुखवाणी" का अवतरण होना शुरू हो गया। सबसे पहले "रास" ग्रन्थ उतरा, जिसमें महारास की अखण्ड लीला तथा परब्रह्म द्वारा धारण किये गये युगल स्वरूप की शोभा का वर्णन है। इसके पश्चात् "प्रकाश" और "खटऋतु" ग्रन्थ उतरा। परमधाम की आत्माओं की जागनी हेतु समय–समय पर भिन्न–भिन्न स्थानों पर

आवश्यकतानुसार वाणी उतरती रही। खिलवत, परिक्रमा, सागर, श्रृंगार, तथा सिन्धी के ग्रन्थ में परमधाम का आनन्द उड़ेला गया है। सनंध, खुलासा, मारफत सागर, तथा कयामतनामा में कुरआन के हकीकत एवं मारिफत के भेदों को स्पष्ट किया गया है, जिससे शरीयत के नाम पर होने वाले हिन्दू–मुस्लिम के विरोध को मिटाकर शान्ति का मार्ग प्रशस्त किया जा सके। किरन्तन ग्रन्थ सम्पूर्ण वाणी का संक्षिप्त रूप है, जिसमें वेद–वेदान्त तथा भागवत आदि के गूढ़ एवं अनसुलझे प्रश्नों का समाधान किया गया है। कलश ग्रन्थ में भी हिन्दू धर्मग्रन्थों के रहस्यों को बहुत अच्छी तरह से प्रकट किया गया है।

वस्तुतः श्री प्राणनाथ जी के मुखारविन्द से अवतरित होने वाली ब्रह्मवाणी की महत्ता को वही समझ

सकता है, जो सम्पूर्ण वेद–वेदांग तथा कतेब ग्रन्थों में डुबकी लगाते–लगाते थक गया हो, किन्तु यथार्थ सत्य को जानने का सच्चा जिज्ञासु हो।

अब श्री प्राणनाथ जी परमधाम की आत्माओं को जाग्रत करने हेतु देश–विदेश में भ्रमण करने लगे। यात्रा की कठिनाइयाँ होते हुए भी भारतवर्ष के कई प्रान्त गुजरात, महाराष्ट्र, राजस्थान, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, सिन्ध प्रान्त, तथा अरब देशों में भी उन्होंने परमधाम के अलौकिक ब्रह्मज्ञान का रस बरसाया।

सर्वप्रथम वि.सं. १७१८ में उन्होंने जूनागढ़ के शास्त्रार्थ महारथी "हरजी व्यास" को अपने अलौकिक ज्ञान से नतमस्तक किया। भागवत् के इस एक प्रश्न का उत्तर हरजी व्यास नहीं दे सके थे कि अक्षर ब्रह्म का वह अखण्ड निवास (महल) कहाँ है?

इसके पश्चात् श्री प्राणनाथ जी दीप बन्दर, कच्छ, मंडई, कपाइये, भोजनगर में आत्माओं को जाग्रत करते हुए ठट्ठानगर आये, जहाँ कबीर पन्थ के आचार्य चिन्तामणि जी शिष्यों सहित जाग्रत हुए, जिनके एक हजार शिष्य थे। इसके पश्चात् सेठ लक्ष्मण दास भी जाग्रत हुए, जिनका ९९ जहाजों से व्यापार हुआ करता था। ये ही बाद में श्री लालदास जी के रूप में प्रसिद्ध हुए।

इसके पश्चात् श्री जी (श्री प्राणनाथ जी) अरब देशों में गये, जहाँ उन्होंने मस्कत बन्दर तथा अबासी बन्दर में सैकड़ों आत्माओं को जाग्रत किया। अबासी बन्दर में धन, मांस, और शराब में डूबे रहने वाले भैरव ठक्कर जैसे व्यक्ति ने भी श्री जी की कृपा दृष्टि से परब्रह्म का साक्षात्कार कर लिया।

वि.सं. १७२८ में श्री प्राणनाथ जी अरब से वापस

भारत ठट्ठानगर (वर्तमान कराची) आ गये। इसके पश्चात् सूरत में सत्रह माह रहे, जिसमें श्याम भाई जैसे वेदान्त के आचार्य एवं गोविन्दजी व्यास सहित सैंकड़ों लोगों ने अपनी अध्यात्मिक प्यास बुझायी। सूरत से ही बहुत से सुन्दरसाथ ने अपना घर–द्वार हमेशा के लिये छोड़ दिया और श्री प्राणनाथ जी के साथ जागनी अभियान पर निकल पड़े।

सूरत से सिद्धपुर होते हुए श्री प्राणनाथ जी मेड़ता पहुँचे। वहाँ मुल्ला के मुख से बाँग सुनकर उन्होंने हिन्दू–मुस्लिम मतों के एकीकरण करने का दृढ़ संकल्प किया। औरंगज़ेब को कुरआन के हकीकत और मारिफत के ज्ञान द्वारा शरीयत से दूर करने के उद्देश्य से वे दिल्ली पहुँचे, किन्तु भेंट न होने के कारण वार्ता न हो सकी। पुनः दिल्ली से वि.सं. १७३५ में वे हरिद्वार के महाकुम्भ में

सम्मिलित हुए, जहाँ वैष्णवों के चारों सम्प्रदायों, दश नाम सन्यास मत, तथा षट् दर्शन के आचार्यों के साथ उनका शास्त्रार्थ हुआ। जिसमें सभी ने हार मानकर उन्हें "श्री विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक" मानकर उनके नाम की ध्वजा फहराई तथा बुद्ध जी का शाका भी प्रचलित किया।

हरिद्वार से श्री जी पुन: दिल्ली आये और औरंगज़ेब को कियामत के जाहिर होने का सन्देश भिजवाने का प्रयास किया गया। दिल्ली से अनूपशहर आते समय सनन्ध की वाणी भी उतरी। दिल्ली में १२ सुन्दरसाथ को औरंगज़ेब के पास भेजा, किन्तु बादशाह के अधिकारियों ने उन १२ सुन्दरसाथ के साथ बहुत ही कष्टदायक व्यवहार किया, जबकि बादशाह ने उन्हें सम्मानपूर्वक रखने को कहा था।

इसके पश्चात् श्री प्राणनाथ जी ने औरंगज़ेब के अत्याचार का विरोध करने के लिये उदयपुर, औरंगाबाद, रामनगर, आदि के राजाओं को जाग्रत करने का प्रयास किया, किन्तु परमधाम का अँकुर न होने के कारण कोई जाग्रत न हो सका। निदान श्री जी पद्मावती पुरी धाम पन्ना आये, जहाँ महाराजा छत्रसाल जी ने उन्हें पूर्णब्रह्म का स्वरूप मानकर अपना तन, मन, धन उन पर न्योछावर कर दिया।

छत्रसाल जी ने महारानी के साथ श्री जी की पालकी को स्वयं उठाकर महल में पधराया। चौपड़े की हवेली में उन्होंने सिंहासन पर बाई जी के साथ बैठाकर साक्षात् पूर्ण ब्रह्म के रूप में मानकर श्री जी की आरती उतारी और सबके सामने स्पष्ट रूप से कह दिया कि जो कोई भी इन्हें अक्षरातीत मानने में संशय करता है, वह

परमधाम की ब्रह्मसृष्टि ही नहीं है।

छत्रसाल जी की ऐसी निष्ठा देखकर श्री प्राणनाथ जी ने उन्हें अपने हुक्म की शक्ति दे दी तथा स्वयं माथे पर तिलक करके "महाराजा" घोषित कर दिया। यह श्री प्राणनाथ जी की कृपा का ही फल था कि ५२ लड़ाइयों में वे हमेशा ही विजयी रहे और पन्ना की धरती हीरा उगलने लगी।

महाराजा छत्रसाल जी के चाचा बलदीवान सहित कुछ लोगों के मन में श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप के सम्बन्ध में संशय था, जिसे दूर करने के लिये कुरआन और वेद–शास्त्रों के विद्वान बुलाये गये। महोबा के काज़ी अब्दुल रसूल से श्री जी की कुरआन पर चर्चा हुई। पाँच तरह की पैदाइश के प्रश्न के सम्बन्ध में काज़ी ने हार मानकर श्री प्राणनाथ जी के चरणों में प्रणाम किया और

कुरआन को सिर पर रखकर यह कसम खाते हुए कहा कि ये श्री प्राणनाथ जी ही कियामत के समय में आने वाले "आखरूल जमां इमाम महदी" (खुदा) हैं। इसी प्रकार सुप्रसिद्ध विद्वान बद्रीदास जी ने भी शास्त्रार्थ में हार मानकर उन्हें "श्री विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक स्वरूप" माना।

लगभग दस वर्ष तक श्री प्राणनाथ जी की कृपा से पन्ना जी में परमधाम का आनन्द बरसता रहा। सबने यही माना कि हमारे मध्य में परब्रह्म की लीला चल रही है। आज भी श्री पन्ना जी के गुम्मट मन्दिर में श्री महामति जी ध्यानावस्था में विराजमान हैं।

(विस्तृत वर्णन पढ़ने के लिए "श्री बीतक" या "दोपहर का सूरज" का अवलोकन करें)

❖❖❖❖❖

ऐतिहासिक प्रमाण

हरिद्वार का शास्त्रार्थ

वि.सं.१७३५ (सन् 1678) में हरिद्वार के महाकुम्भ में श्री प्राणनाथ जी सुन्दरसाथ के साथ पहुँचे। वहाँ पर वैष्णवों के चारों सम्प्रदायों, दश नाम सन्यास मत, तथा षट दर्शनों के आचार्यों के साथ श्रीजी का शास्त्रार्थ हुआ। वैष्णव के आचार्यों तथा दश नाम सन्यास मत की सातों मन्याओं के आचार्यों ने अपना तथा अपने आराध्य का धाम, इष्ट, मुक्ति का स्वरूप और स्थान, सुख विलास का स्थान, सभी कुछ नश्वर जगत के अन्दर (१४ लोक, निराकार तक) बताया। केवल निम्बार्क तथा छठी मन्या ने थोड़ी बहुत अखण्ड की बात की। श्रीजी ने पूछा कि महाप्रलय में जब १४ लोक , निराकार–मोहतत्व तक का लय हो जायेगा, तब आपका

धाम, ब्रह्म का स्वरूप, तथा मुक्ति का स्थान कहाँ रहेगा? सभी आचार्यों के पास श्रीजी के इस प्रश्न का कोई भी उत्तर नहीं था।

न्याय दर्शन के आचार्यों ने कहा कि दु:ख की २१ सीढ़ियों (५ इन्द्रिय + मन, छ: इन्द्रियों के विषय, छ: प्रकार के विषयों का ज्ञान, सुख, दु:ख, तथा शरीर) के नाश होने पर अखण्ड सुख की प्राप्ति होती है।

श्री प्राणनाथजी ने कहा कि महाप्रलय में जब यह स्थूल जगत या शरीर ही नहीं रहेगा, तब उस अनादि ब्रह्म तथा जीव का निवास कहाँ होगा? इस पर उन्हें मौन होना पड़ा।

मीमांसा दर्शन के आचार्यों ने कहा कि कर्म अनादि और अद्वितीय है। इसके बिना और कुछ है ही नहीं।

श्रीजी ने कहा– कर्म में सदा भ्रान्ति रहती है , जबकि ब्रह्म अखण्ड, एकरस स्वरूप वाला है। जीव के अहंकार तथा मन के संकल्प–विकल्प के कारण कर्म की उत्पत्ति होती है। जहाँ पर ब्रह्म का अखण्ड स्वरूप है, वहाँ पर मन की गति नहीं है। इसलिये ब्रह्म के स्वरूप में कर्म की स्थिति का प्रश्न नहीं है। ब्रह्मज्ञान प्राप्त हो जाने पर कर्म–बन्धन भी समाप्त हो जाते हैं। आपका आशय जैमिनि के कथनों के विपरीत है। इस पर वे मौन हो गये।

मीमांसकों के शान्त होने पर सांख्य दर्शन के विद्वानों ने कहा कि जब पुरुष तथ प्रकृति का संयोग होता है तब जगत की उत्पत्ति होती है, तथा अलगाव होने पर महाप्रलय हो जाता है, दोनों ही नित्य एवं अनादि हैं।

श्री प्राणनाथ जी ने पूछा कि पहले आप यह बताइये

कि प्रकृति और पुरुष का स्वरूप क्या है? यदि निराकार है, तो ये कहाँ पर और कैसे मिलते हैं? महाप्रलय के पश्चात् प्रकृति का स्वरूप कहाँ रहता है? इस बात पर उन्हें मौन होना पड़ा।

वैशेषिक दर्शन के आचार्यों ने कहा कि सारे जगत की उत्पत्ति तथा लय का मूल काल है। अत: यह ही ब्रह्म है।

श्रीजी ने कहा कि जहाँ पर ब्रह्म का अखण्ड स्वरूप है, वहाँ पर काल की सत्ता नहीं होती, जबकि यह सम्पूर्ण जगत काल के अधीन है। जगत के स्वरूप और ब्रह्म के स्वरूप को एक–दूसरे में ओत–प्रोत मानना आपकी भूल है।

योग दर्शन के आचार्यों ने कहा कि सर्वव्यापक होने

के कारण इस शरीर में ही ब्रह्म का दर्शन हो जाता है। योग के अंगों के अनुष्ठान तथा नाड़ी–चक्र शोधन द्वारा उस ज्योतिर्मय ब्रह्म का साक्षात्कार होता है। उस ब्रह्म में यह जगत् किरणों के समान स्थित है।

श्री प्राणनाथ जी ने कहा कि वेद, उपनिषद में तो मात्र परमगुहा, एकादश द्वार में ही ब्रह्म के साक्षात्कार का वर्णन है, जबकि योग दर्शन में परमगुहा से सम्बन्धित कोई भी सूत्र नहीं है। ब्रह्म और मायावी जगत् की तुलना सूर्य तथा उसकी किरणों से करना गलत है , क्योंकि दोनों (ब्रह्म तथा जगत्) ही विपरीत गुणों वाले हैं, जबकि सूर्य की किरणें उसका ही स्वरूप कही जाती हैं।

नवीन वेदान्तियों ने कहा– ब्रह्म की तरह माया भी अनादि है और उसी के अन्दर रहती है। यह सारा जगत ब्रह्मरूप है। अद्वितीय ब्रह्म के अतिरिक्त किसी अन्य को

देखना बहुत बड़ी अज्ञानता है। इच्छारहित वह ब्रह्म सबसे अलग है।

श्री जी ने कहा कि हे वेदान्त के आचार्यों! आप यह बताइये कि त्रिगुणातीत ब्रह्म के अन्दर माया किस प्रकार से है तथा इस मायावी जगत् के अन्दर एकरस ब्रह्म किस प्रकार व्यापक है? यदि माया अनादि है, तो वह साकार है या निराकार, इसे स्पष्ट करें। यदि यह सारा जगत ही ब्रह्मरूप है, तो ज्ञान के ग्रन्थों की आवश्यकता ही क्या है? वेदान्त के आचार्यों के पास श्री प्राणनाथ जी के इन तर्कों का कोई प्रामाणिक उत्तर नहीं था।

तद्पश्चात् सभी सम्प्रदाय के आचार्यों ने श्री जी से उनकी पद्धति पूछी। श्री प्राणनाथ जी ने धर्मग्रन्थों के साक्ष्यों के साथ श्री निजानन्द सम्प्रदाय की पद्धति सुनायी, जो इस प्रकार है–

"भगवान शिव पार्वती जी से कहते हैं–

हे सुन्दरी! ब्रह्मानन्द रस को जानने वाली तथा ब्रह्मज्ञानियों में सर्वश्रेष्ठ ब्रह्मसृष्टियों की पद्धति को मैं तुमसे कहता हूँ, उसे सुनो। निश्चय ही गोत्र चिदानन्द कहा गया है। आनन्दमय परब्रह्म ही सदगुरु हैं। शिखा ज्ञानमयी कही गयी है और सूत्र अक्षर ब्रह्म है। किशोर स्वरूप वाली परब्रह्म की आह्लादिनी शक्ति श्यामा जी ही इष्ट हैं और पुरुषोत्तम अक्षरातीत पूज्यनीय हैं जिनको पाने का एकमात्र साधन पतिव्रता साधन है। नित्य वृन्दावन ही सुख विलास का स्थान माना गया है। परब्रह्म के युगल स्वरूप का जप एवं मन्त्र तारतम्य कहा गया है। ब्रह्मविद्या ही देवी है तथा पूर्ण ब्रह्म ही सनातन देव हैं। गोलोक को शाला तथा अखण्ड का द्वार कहा गया है। स्वसं वेद (आत्मवेद) तारतम वाणी ही वेद है, जिसके

अनुकरण का फल अखण्ड में नित्य विहार है। बेहद से परे दिव्य ब्रह्मपुर ही धाम है। सदगुरु (परब्रह्म) के चरण ही क्षेत्र हैं, जो सबको शुद्ध करने वाले हैं। परमधाम की अखण्ड यमुना जी ही तीर्थ हैं। एकमात्र अनन्य प्रेम लक्षणा भक्ति ही मान्य है। महाविष्णु ही ऋषि हैं। सभी शास्त्रों के अद्भुत साररूप श्रीमदभागवत् (रास) का श्रवण करना माना गया है। जाग्रत स्वरूप वाला ज्ञान (श्री प्राणनाथ प्रणीत) ही ग्राह्य है। परमधाम में परब्रह्म का आनन्द स्वरूप ही कुल (वंश) है, जिनके अंग रूप सभी ब्रह्ममुनि हैं। परब्रह्म की आनन्द स्वरूपा आत्माओं द्वारा प्रकाशित किया हुआ सम्प्रदाय चिदानन्द (निजानन्द) है। इस प्रकार ब्रह्मसृष्टियों की यह "पुरुषोत्तम" नामक पद्धति कही गयी है। हे सुन्दरी! अपने निज स्वरूप के साक्षात्कार के लिये इस पद्धति के अनुसार आचरण

करना चाहिए।" (माहेश्वर तन्त्र २८/४५-५४)

अन्ततः सभी मत के विद्वानों ने हार मानकर उन्हें "श्री विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक स्वरूप" माना और उनके नाम की ध्वजा फहराई तथा आरती उतारी। उन्होंने श्री प्राणनाथ जी के सम्मान में बुद्ध जी का शाका भी प्रारम्भ किया।

औरंगज़ेब को जाग्रत करने का प्रयास

उस समय लगभग सम्पूर्ण देश पर औरंगज़ेब का शासन था। वह इस्लाम की ओट में जबरन धर्मान्तरण करवाने पर तुला हुआ था। यद्यपि औरंगज़ेब कुरआन का बहुत बड़ा विद्वान था, फिर भी शरीयत के काज़ियों के दबाव में वह हिन्दुओं के प्रति बहुत अधिक घृणा का भाव

रखता था।

कुछ समय तक औरंगज़ेब के अधिकारियों के माध्यम से बादशाह से मिलने का प्रयास किया गया, किन्तु सफलता नहीं मिली। अन्त में बारह सुन्दरसाथ (लालदास, शेख बदल, भीम भाई, चिन्तामणि, खिमाई भाई, चंचलदास, नागजी भाई, सोमजी भाई, कायम मुल्ला, दयाराम, बनारसी, गंगाराम) मुस्लिम फकीरों के वेश में जामा मसिजद में जाकर सनन्ध (वाणी) गाने लगे। जामा मस्जिद के शाही इमाम ने उनकी भेंट औरंगज़ेब बादशाह से करवा दी।

इन सुन्दरसाथ ने बादशाह से कियामत के प्रकट होने एवं इमाम महदी के जाहिर होने के सम्बन्ध में एकान्त में बात करना चाहा। औरंगज़ेब स्वयं आन्तरिक रूप से इमाम महदी से मिलने का इच्छुक था, किन्तु

शरीयत के दबाव में वह एकान्त में मिल नहीं सका। बादशाह के काज़ी शेख इस्लाम के इशारे पर कोतवाल सीदिक पौलाद द्वारा उन १२ सुन्दरसाथ को काफी यातना दी गयी, जिसकी सूचना मिलने पर श्रीजी ने बहुत दु:ख माना और महाप्रलय के लिये मन बना लिया, किन्तु परब्रह्म की प्रेरणा से जागनी लीला की अवधि और बढ़ा दी गयी।

काज़ी शेख इस्लाम ने अपनी भूल स्वीकार कर ली। यद्यपि उसने स्पष्ट कहा कि आपके द्वारा दी गई कुरआन की साक्षियों से हम यह स्वीकार करते हैं कि कियामत का समय आ गया है तथा इमाम महदी प्रकट हो गये हैं, किन्तु हम इसे अभी जाहिर नहीं कर सकते, क्योंकि ऐसा होने पर इस्लामी शरीयत का राज्य समाप्त हो जायेगा। औरंगज़ेब भी इसी डर से श्री प्राणनाथ जी के

चरणों में नहीं आ सका , क्योंकि उसे डर था कि यदि उसने ऐसा कर दिया तो शरीयत को चाहने वाले मुसलमान उसे ही मरवा देंगे।

मक्का–मदीना से आये हुए **वसीयतनामें** तथा कालपी के मौलवियों का लिखा हुआ **महज़रनामा** (स्वीकृति पत्र) देखकर उसे विश्वास तो हो गया था कि इमाम महदी जाहिर हो चुके हैं, किन्तु शरीयत और भय के कारण श्रीजी की शरण में आना उसके लिये सम्भव नहीं हो सका, जिसका उसे मृत्यु समय तक पश्चाताप रहा। इसके अतिरिक्त मुगल साम्राज्य के पतन का रहस्य भी उसे मालूम हो चुका था।

इन बातों का प्रमाण है औरंगज़ेब द्वारा अपने पुत्र आज़म को लिखा अन्तिम पत्र, जिसका कुछ अंश यहाँ उद्धरित किया जा रहा है–

".....मेरा अमूल्य जीवन व्यर्थ में ही चला गया। मेरे घर **मालिक** आये थे, परन्तु मेरी अंधी आँखें उसका तेज प्रताप नहीं देख सकी। जीवन का अंत नहीं होता। उन वाक्यों का कोई अवशेष नहीं है, वे अब नहीं है, और न ही भविष्य में कोई आशा है....."

(औरंगज़ेब का इतिहास, भाग ५ पृष्ठ २१०, लेखक– यदुनाथ सरकार)

मक्का–मदीना से आये वसीयतनामे

श्री जी साहेब श्री प्राणनाथ जी की लीला के दौरान, क़ियामत के आने व आखरुल जमां इमाम महदी के प्रकट होने की साक्षी में मदीने की मस्जिद की दो मीनारें गिर पड़ीं तथा वहाँ से वसीयतनामें लिखकर हिन्द के

बादशाह औरंगज़ेब के पास आये। इन वसीयतनामों में लिखा था कि इमाम महदी हिन्द में ज़ाहिर हो गए हैं तथा ज़बराइल यहाँ से क़ुरआन (नूरी झण्डा) हिन्द में ले गया है। उन वसीयतनामों का हिन्दी अनुवाद यहाँ दिया जा रहा है।

पहला वसीयतनामा

वसीयतनामा पहला, जो विक्रम संवत् १७१२ में और क़ुरआन की गिनती से हिज़री १०६४ में आया।

शिर्क (गुनाह) व ज़ुल्म और सितम फैल बुरे फितने दज्जाल के से बीच इस साल के है। चार लाख ग्यारह हज़ार मुसलमान बेइमान हो गये हैं। बीच किसी के भी निशानी ईमान की न रही, और बहुत निशानियां क़ियामत की और फैल बुरे के से ऊपर तुम्हारे ज़ाहिर आयी। और ज़हूर ईसा अलैहिस्सलाम का भी नज़दीक

आ पहुँचा है। आगे इससे सुनेंगे। चाहिए कि तोबा करो और खुदाय से पनाह माँगो।

दूसरा वसीयतनामा

दूसरा वसीयतनामा वि. सं. १७३२–३३ में आया और क़ुरआन की गिनती से हिज़री १०८६ में आया।

इस भांति से कि बीच इस साल के चार लाख और नव हज़ार आदमी बेइमान होकर मरे, कि ऊपर निहायत सख्ती उसके कि ज़माना नज़दीक इमाम महदी का आ पहुँचा। यह मेरा तांई लिए हुक्म मुहम्मद महदी का है। और भी नज़दीक है, कि दरवाज़ा तौबा का बन्द होता है। उस सबब से दस खशलते बुरी ज़ाहिर होने की निशानी क़ियामत के ऊपर जात तुम्हारी के ज़ाहिर आयी।

तीसरा वसीयतनामा

तीसरा वसीयतनामा वि. सं. १७३५ में आया और क़ुरआन की गिनती से हिज़री १०९० में आया।

कि बीच इस हफ्ते के इस ज़ुमां से ले तो उस ज़ुमां (तक तांई) बहुत सख्ती उस फितने के से ७०,००० आदमी मेरी उम्मत में से बेइमान हो गये। उसमें से छूट केवल सात आदमी और कोई भी ईमान से सलामत न रह गया। इस सबब से कि दरगाह हक़ तआला की से खिताब आया कि ऐ मुहम्मद ! तेरी उम्मत गुनाहों के कहर से और ज़ुल्म से नहीं डरती। तुझे सौगन्ध इज़्जत और ज़लाल अपने की है। अब तुमसे सूरतें इनों की बदलता हूँ। उस वक्त पैगम्बर सल्लिलाहो अलैहि वसल्लम ने आज़िजी और जारी नियाज सत याने अर्जी की कि ऐ बख़्शने वाले और रहम करने वाले ! इस वक्त अपना

कहर इनों से फेर रख। मैं वसीयतनामा फिर भेजता हूँ। उन्हें चाहिए कि तेरे गज़ब से डरें और इन्साफ में यानि सच में आवें। चाहिए कि मेरी उम्मत इन फैल नालायक से डर के चंगुल बीच दीन खुदाय के मरे कि कहर व गुनाह तुम्हारे के से नहीं। जानता हूँ, कि तुम्हारी सिफायत फेर करावेगा। कि गज़ब खुदाय का आ पहुँचा। कि तमाम होने को सदी अग्यारहीं की है। **ज़िबरील नाज़िल हुआ कि बरकत दुनिया की, शफ़कत फकीरों की, और क़ुरआन मज़ीद को इस ज़हान से उठाये के अपने मकान को ले गया, और दरवाज़ा तौबा का बन्द होता है।** सो खादिमान दरगाह के ऊपर साबित उस बात की सौगन्ध सख्त खाय के लिखा है कि हम यह बात हुक्म मुहम्मद मुस्तफा सल्ल. के से और इमाम मुहम्मद महदी के से लिखते हैं। अगर हमने झूठ आपसे लिखा

होय तो दोनों ज़हान में हमारा मुंह स्याह होय और खुदाये के दीदार से और मुहम्मद सल्ल. की सिफायत से महरूम रहें और जो इसे साँच करके न माने और ऐतबार न करे, तो बस वही काफ़िर है।

चौथा वसीयतनामा

तीन वसीयतनामों में दीन के निशान की खबर नहीं पायी थी, सो खबर इस दीन के निसान की पीछे इस बरस के बीच दीन आखिर सदी अग्यारहीं के वसीयतनामा चौथा आखिर के से बीच हिज़री १०९० और १०९९ के आया है, लगभग वि. सं. १७३५।

मालूम और समझा गया कि हिसाब आखिरत का बीच हिन्दुस्तान के होवे। ए हुक्म खुदाय का और रसूल का हुआ कि संवारने इस काम को आगे से ही लेने तमीज़ हिसाब उम्मत का (१०१) देव तैनात हिन्दुस्तान

के हुए है। हुक्म खुदाय का तीन रात तीन दिन बीच तमाम खलक के चलावे। और तमाम होने सदी अग्यारहीं के मेहेतर ज़िबरील नाज़िल होए बरकत दुनिया की और सफ़कत फकीरों की और कुरआन मज़ीद को इस ज़हान से उठाय के अपने मकान को ले जाय और दरवाज़ा तौबा के बन्द हो जाय।

महिमा

सच्चिदानन्द श्री प्राणनाथ जी की महिमा का शब्दों में वर्णन करना असम्भव कार्य है। जिस हकी सूरत श्री महामति जी के स्वरूप में पाँचों सर्वश्रेष्ठ शक्तियाँ विराजमान हैं, उनके स्वरूप की महिमा का गान करने के लिए यह जिह्वा तथा यह मनुष्य जीवन दोनों ही बहुत छोटे हैं। परम सत्य तो यह है कि श्री प्राणनाथ जी की शोभा, ज्ञान, प्रेम, कृपा, व शक्ति अतुलनीय हैं।

सच्चिदानन्द श्री प्राणनाथ जी के इस स्वरूप के प्रकटन की प्रतीक्षा सभी देव, तीर्थंकर, अवतार, औलिया, पैगम्बर, फकीर, ऋषि, योगी आदि कर रहे थे। उनके स्वरूप का दर्शन पाकर सभी धन्य हो गये। पूर्णब्रह्म श्री प्राणनाथ जी हिन्दू, मुसलमान, यहूदी, और ईसाई सभी के हैं। परमात्मा कभी भी धर्म या सम्प्रदाय

के आधार पर भेद नहीं करते, वे तो सिर्फ प्रेम व समर्पण को महत्व देते हैं।

श्री प्राणनाथ जी के लिए राज, अक्षरातीत, प्रियतम, सुन्दरवर, परब्रह्म, परमात्मा, पूर्णब्रह्म, सच्चिदानन्द, श्याम, सनातन पुरुष, उत्तम पुरुष, धाम धनी, विजयाभिनन्द निष्कलंक बुद्ध, प्रियतम, ख़ुदा, अल्लाह तआला, खसम, हक़ तआला , रब्ब, इमाम मुहम्मद महदी साहिबुज़्ज़मां, The Lord, Supreme Truth God, Second Christ, आखिरी मूसा, आदि सम्बोधन प्रयुक्त होते हैं।

सम्वत् १७४०–१७५१ तक की लीला में जो भी सुन्दरसाथ अपने भावों के अनुसार श्री प्राणनाथ जी को परमधाम के युगल स्वरूप श्री राजश्यामा जी, व्रज–रास के श्री कृष्ण, अरब के मुहम्मद साहब, या सदगुरु धनी

श्री देवचन्द्र जी के स्वरूप में मानता था, उसे चर्चा के दौरान उसी स्वरूप का दर्शन होता था।

श्री विजयाभिनन्द बुद्ध जी की महिमा

भविष्योत्तर पुराण के अन्तर्गत **बुद्ध गीता** का वर्णन है, जिसमें ब्रह्मा जी ने नारद जी को श्री विजयाभिनन्द बुद्ध जी की पहचान व महिमा का वर्णन किया है। बुद्ध गीता में वर्णित कुछ श्लोक निम्न हैं–

हे नारद ! मोहरूपी नींद में ही ब्रह्मा, विष्णु, तथा शिव उत्पन्न हुए हैं। नींद के अपने कारण में लीन हो जाने पर ब्रह्मा, विष्णु, शिव, तथा सभी प्राणी भी उसी में लीन हो जाते हैं ।।८।।

यह अक्षर ब्रह्म उस मोह रूपी नींद से परे हैं। इस कथन का वर्णन पहले किया जा चुका है। हे पुत्र ! किन्तु बुद्ध जी तो उस अक्षर ब्रह्म से भी परे हैं ।।९।।

श्री विजयाभिनन्द बुद्ध जी सबकी बुद्धि को सुन्दर करने वाले हैं, अर्थात् सबको जाग्रत बुद्धि प्रदान करने वाले हैं। ये परब्रह्म के ही स्वरूप हैं। ये अत्यन्त तेजोमय हैं एवं अक्षर ब्रह्म से भी परे के साक्षात् परम पुरुष हैं। ये सभी प्राणियों का परम कल्याण करने वाले हैं। इस कथन में कोई भी संशय नहीं है ।।१६।।

यह श्री बुद्ध जी ही अक्षरातीत पुरुष कहे जाते हैं। ये अत्यन्त तेजोमय हैं तथा मूल स्वरूप परब्रह्म के निज स्वरूप कहे जाते हैं ।।१७।।

जागृत बुद्धि की शक्ति को अपने अन्दर धारण करने वाले बुद्ध जी शुद्ध ज्ञान स्वरूप कहे जाते हैं। ये सबको जाग्रत बुद्धि देने वाले हैं, इसलिए ये ब्रह्मज्ञान का ज्योतिर्मय स्वरूप कहे जाते हैं ।।१८।।

जिसके हृदय में बुद्ध जी का स्वरूप विराजमान होता है, उसके मन में दुःख या चिन्ता नहीं होती, और उसे लौकिक सुख का पूर्ण ज्ञान भी नहीं रहता, और न उसे अपने शरीर का ही वास्तविक ज्ञान रहता है अर्थात् वह सुख–दुःख, हर्ष–शोक, एवं शरीर के मोह जनित द्वन्द्वों से परे हो जाता है ।।२१।।

स्वयं आदिनारायण भी जिन बुद्ध जी से निराकार से परे का ज्ञान प्राप्त करने वाले हैं और ऐसा करके वे भी योगमाया के ब्रह्माण्ड में जाग्रत एवं अखण्ड स्वरूप वाले

हो जायेंगे। इस कथन में संशय जैसी कोई भी बात करने योग्य नहीं है ।।२४।।

वे श्री बुद्ध जी ही मोक्ष के स्वरूप हैं अर्थात् सभी प्राणियों को अखण्ड मुक्ति देने वाले हैं । इस भवसागर को मथकर वे पाँच रत्नों शिव, सनकादि, कबीर, शुकदेव, और विष्णु भगवान (अक्षर ब्रह्म की पँचवासनाएँ) को निकालकर स्वयं तेजोमय परब्रह्म के रूप में अपनी महिमा से व्यापक होंगे ।।२५।।

श्री बुद्ध जी का वह स्वरूप परमधाम की सखियों (आत्माओं) के साथ जागनी रास की लीला करेगा। वे सखियाँ श्रुतियों का स्वरूप हैं, अर्थात् जिस प्रकार वेद की ऋचायें वेद का स्वरूप होती हैं, उसी प्रकार परमधाम की आत्मायें अक्षरातीत का ही स्वरूप होती हैं।

ब्रह्ममुनियों के रूप में प्रकट होने वाली वे सखियाँ तुम्हारे द्वारा हमेशा ही जानने योग्य हैं ।।३८।।

श्रुतियों के समान पवित्र स्वरूप वाली वे सखियाँ, अक्षरातीत के साथ क्रीड़ा करती हुई उनके बुद्धमय स्वरूप में स्वयं व्याप्त हैं तथा बुद्ध जी भी उनके अन्दर व्यापक हैं। इस कथन में कोई भी संशय नहीं हो सकता ।।३९।।

श्री बुद्ध जी का स्वरूप विशुद्ध गौर वर्ण का होगा, अर्थात् उनके यश में किसी भी प्रकार की कालिमा नहीं होगी। वे सभी प्रकार के भेदभाव से रहित, समदर्शी, एवं अद्वितीय परब्रह्म के स्वरूप होंगे। वे समान अंगों वाले, अर्थात् ऊँच–नीच की भावना से रहित, और मायावी विकारों से पूर्णतया रहित होंगे। वे कल्प के प्रारम्भ में ही प्रकट होने वाले हैं ।।४०।।

उस समय एकमात्र बुद्ध जी ही वेद के समान सम्पूर्ण ज्ञान के भण्डार होंगे तथा स्वयं वे ही आनन्दमय परब्रह्म के रूप में जाहिर होंगे ।।४१।।

हे पुत्र ! श्री बुद्ध जी की कृपा से पशु और अपशु, चर और अचर, तथा मोह (नींद, निराकार) से उत्पन्न होने वाले जो भी प्राणी हैं, वे सभी अखण्ड धाम (योगमाया) में अखण्ड स्वरूप वाले हो जायेंगे ।।४८।।

सत्व, रज, तथा तम– इन तीनों गुणों तथा इनके कारण होने वाले कर्मों से रहित, सबसे अतीत, अक्षर ब्रह्म के भी स्वामी, शान्ति स्वरूप, उन श्री बुद्ध जी को प्रणाम है ।।५५।।

श्री बुद्ध जी के विषय में न तो सांख्य दर्शन की ही गति है, न वेदान्त की, और न मीमांसा दर्शन की,

अर्थात् ये शास्त्र उस अक्षरातीत पूर्ण ब्रह्म की स्पष्ट पहचान नहीं करा सकते हैं। जिनके स्वरूप में किसी भी प्रकार से माया की गम नहीं है, सबके आश्रय स्वरूप ऐसे बुद्ध जी को प्रणाम है ।।५६।।

अत्यधिक सुन्दर एवं शान्ति स्वरूप, ज्ञानमयी दीप्ति से भरपूर, तेजोमय स्वरूप वाले, लौकिक कर्मकाण्डों का पालन न करने वाले, सुख स्वरूप, संसार को ब्रह्मज्ञान की आभा से भरपूर करने वाले, उन श्री बुद्ध जी को प्रणाम है ।।५७।।

सम्पूर्ण जगत के स्वामी, अपनी आत्माओं के प्रति पतिपने के सम्बन्ध को निभाने वाले, जाग्रत बुद्धि रूपी घोड़े पर विराजमान, उन परब्रह्म स्वरूप श्री बुद्ध जी को प्रणाम है ।।५८।।

लिंग पुराण में शिव–पार्वती संवाद के रूप में **बुद्ध स्तोत्र** का वर्णन है। उसमें वर्णित कुछ श्लोक निम्न हैं–

अक्षर ब्रह्म की जाग्रत बुद्धि से युक्त उन श्री विजयाभिनन्द निष्कलंक बुद्ध जी को प्रणाम है। सभी आत्माओं के धाम स्वरूप तथा शान्ति के स्वरूप श्री बुद्ध जी को प्रणाम है ।।१।।

माया से मोहित होने वाले सभी प्राणी उस परब्रह्म को निराकार कहते हैं। जिस परमधाम का ज्ञान कलियुग में प्रकट होगा, उसके विषय में वे नहीं जानते हैं ।।६।।

इसलिए हे देवी ! तुम्हारे सामने मैंने जिस कलियुग का वर्णन किया है, वह धन्य है। श्री बुद्ध जी के ज्ञान से यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड ही योगमाया के ब्रह्माण्ड में अखण्ड होने वाला है ।।१२।।